# हिन्दी भाषा

डॉ. भोलानाथ तिवारी

Scanned by TapScanner

## (अ) संज्ञा

संज्ञाएँ चार प्रकार की होती हैं : (क) व्यक्तिवाचक (जैसे राम, आगरा, ताजमहल, चेतक आदि); (ख) जातिवाचक (जैसे आदमी, नगर, भवन, घोड़ा आदि); (ग) भाववाचक (जैसे सुंदरता, मिठास, शत्रुता आदि); (घ) क्रियार्थक संज्ञा (जैसे चलना, खाना, पीना आदि; प्रयोग—**टहलना** अच्छा है)।

गणना की दृष्टि से संज्ञाएँ दो प्रकार की होती हैं : (क) **गणनीय**—जैसे लड़का, मकान, केला, पेड़। गणनीय संज्ञाओं के बहुवचन बनते हैं तथा इनके साथ संख्यावाचक विशेषण (दो लड़के, कई मकान) आते हैं। (ख) **अगणनीय**—इनकी गणना नहीं हो सकती ; जैसे पानी, अच्छाई, दया आदि। इनके सामान्यतः बहुवचन के रूप नहीं होते और न तो इनके साथ संख्यावाचक विशेषण ही आते हैं।

### संज्ञा शब्दों के कारकीय रूप

हिन्दी में कारकीय रूप तीन प्रकार के होते हैं : (क) **अविकारी रूप**—जिनके साथ कारक-चिह्न (परसर्ग) न लगें; जैसे 'राम गया' में राम ; या 'मैंने फूल देखा' में 'फूल' आदि। (ख) **विकारी रूप**—जिनके साथ कारक-चिह्न (परसर्ग) अवश्य लगें; जैसे 'लड़के ने फूल तोड़ा' में 'लड़के' या 'अपने मित्र को बुलाओ' में 'मित्र'। (ग) **सम्बोधन रूप**—जिसका प्रयोग संबोधन में हो ; जैसे 'ओ मोहन' में 'मोहन' या 'ऐ लड़के' में 'लड़के' या 'हे भाई' में 'भाई' आदि। **अविकारी रूप को मूल रूप** तथा **विकारी** को **विकृत** या **तिर्यक्** रूप भी कहा जाता है।

कारकीय रूप-रचना की दृष्टि से हिन्दी में कुल चार प्रकार के संज्ञा शब्द हैं। इनके रूप तथा उनमें लगने वाले प्रत्यय नीचे दिए जा रहे हैं—

(१) **आकारांत पुल्लिग**—(जैसे घोड़ा)

| | रूप | | प्रत्यय | |
|---|---|---|---|---|
| | एक० | बहु० | एक० | बहु० |
| अविकारी | घोड़ा | घोड़े | शून्य | ए |
| विकारी | घोड़े | घोड़ों | ए | ओं |
| संबोधन | घोड़े | घोड़ों | ए | ओ |

इस पुल्लिग वर्ग में लड़का, बच्चा, गदहा (गधा), रुपया, कुत्ता, चूहा, बेटा, चीता, कीड़ा, साला, पर्दा, दरवाजा, बग़ीचा आदि अधिसंख्य आकारांत शब्द आते हैं। अपवाद ये हैं—

(क) **तत्सम शब्द**—पिता, विधाता, राजा, योद्धा, महात्मा, वक्ता, नेता, विजेता, दाता, त्राता, भ्राता, परमात्मा, ब्रह्मा, श्रोता, विक्रेता, युवा, कर्ता।

(ख) **पुनरुक्तिवाले शब्द**—नाना, दादा, मामा, बाबा, चाचा, काका, जीजा, लाला।

(ग) **वांत, यांत सामान्य तद्भव शब्द**—अगुवा, मुखिया, अँखुवा, मनुवाँ, जिया, हिया।

Scanned by TapScanner

(घ) **कुछ विदेशी शब्द**—दारोग़ा, अब्बा, अल्ला, आक़ा, मौला, मुल्ला, मियाँ।

(ङ) **कुछ पारिभाषिक शब्द**—दादरा, अल्फ़ा, गामा, गुणा।

(च) **कुछ स्थानवाचक शब्द**—महाद्वीपों (अमरीका; आस्ट्रेलिया, एशिया, अफ्रीका), देशों (कनाडा, अर्जेन्टाइना, गाइना) तथा वांत (जैसे गोवा) एवं यांत (जैसे अयोध्या, गया) भारतीय नगरों के नाम।

इन सबके विकारी रूप बनाने में 'आ' के स्थान पर 'ए' नहीं करते तथा जिनके बहुवचन संभव हैं, 'ओं', 'ओ' अलग से जोड़ते हैं, 'आ' के स्थान पर नहीं। अर्थात्, इनके रूप दूसरे वर्ग (आगे देखिए) 'अन्य पुल्लिग' की तरह बनते हैं।

(२) **अन्य पुल्लिंग**—(जैसे व्यंजनांत मित्र, इकारांत कवि, ईकारांत साथी, उकारांत साधु तथा ऊकारांत डाकू आदि)।

| | रूप | | प्रत्यय | |
|---|---|---|---|---|
| | एक० | बहु० | एक० | बहु० |
| अविकारी | मित्र, कवि, साथी, गुरु, डाकू | मित्र, कवि, साथी, गुरु, डाकू | शून्य | शून्य |
| विकारी | मित्र, कवि, साथी, गुरु, डाकू | मित्रों, कवियों, साथियों, गुरुओं, डाकुओं | शून्य | ओं |
| संबोधन | मित्र, कवि, साथी, गुरु, डाकू | मित्रों, कवियों, साथियो, गुरुओ, डाकुओ | शून्य | ओ |

(३) **इकारांत**—(जैसे जाति), **ईकारांत** (जैसे लड़की), इयांत (जैसे गुड़िया) **स्त्रीलिंग**।

| | रूप | | प्रत्यय | |
|---|---|---|---|---|
| | एक० | बहु० | एक० | बहु० |
| अविकारी | जाति, लड़की, गुड़िया | जातियाँ, लड़कियाँ, गुड़ियाँ | शून्य | आँ |
| विकारी | जाति, लड़की, गुड़िया | जातियों, लड़कियों, गुड़ियों | शून्य | ओं |
| संबोधन | जाति, लड़की, गुड़िया | जातियो, लड़कियो, गुड़ियो | शून्य | ओ |

(४) **अन्य स्त्रीलिंग**—(जैसे व्यंजनांत पुस्तक, आकारांत माता, उकारांत ऋतु, ऊकारांत बहू तथा औकारांत गौ आदि)

| | रूप | | प्रत्यय | |
|---|---|---|---|---|
| | एक० | बहु० | एक० | बहु० |
| अविकारी | पुस्तक, माता, ऋतु, बहू, गौ | पुस्तकें, माताएँ, ऋतुएँ, बहुएँ, गौएँ | शून्य | एँ |



Scanned by TapScanner

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| विकारी | पुस्तक, माता, ऋतु, बहू, गौ | पुस्तकों, माताओं, ऋतुओं, बहुओं, गौओं | शून्य | ओं |
| संबोधन | पुस्तक, माता, ऋतु, बहू, गौ | पुस्तको, माताओ, ऋतुओ, बहुओ, गौओ | शून्य | ओ |

मूल शब्दों में प्रत्यय जोड़कर रूप-रचना करने में निम्नांकित ध्वन्यात्मक परिवर्तन करने पड़ते हैं : (१) आकारांत पुल्लिग संज्ञा में शून्य के अतिरिक्त कोई भी प्रत्यय जोड़ा जाय तो अंतिम 'आ' का लोप हो जाता है। जैसे घोड़ा + ए = घोड़ + ए = घोड़े। इसी प्रकार घोड़ों, घोड़ो, आदि में भी। (२) ईकारांत, ऊकारांत संज्ञा शब्द में शून्य प्रत्यय को छोड़कर कोई भी प्रत्यय जोड़ा जाय तो अंत्य 'ई', 'ऊ' क्रमशः 'इ, उ' में परिवर्तित हो जाते हैं। जैसे 'साथी + ओं'= साथि + ओं (साथियों) ; डाकू + ओं = डाकु + ओं = डाकुओं। इसी प्रकार लड़कियों, लड़कियो, बहुएँ, बहुओं, बहुओ आदि में भी। (३) ह्रस्व इ के बाद आँ, ओं, ओ प्रत्यय जोड़ें तो 'य' का आगम हो जाता है। जैसे 'कवि + ओ' = कवियो, साथी+ ओं' = 'साथियों, 'जाति + आँ' = 'जातियाँ' तथा 'लड़की + ओं' = 'लड़कियों' आदि। (४) इयांत स्त्रीलिंग शब्द में आँ, ओं, ओ प्रत्यय जोड़ने पर 'या' का लोप हो जाता है और शब्द इकारांत रह जाता है। जैसे 'गुड़िया + आँ = 'गुड़ियाँ', 'गुड़िया + ओं' = 'गुड़ियों, 'गुड़िया + ओ' = 'गुड़ियो'। यहाँ 'य' का आगम तीसरे नियम से हो जाता है।

## हिंदी के बहुवचन-प्रत्ययों का रूपिमिक विश्लेषण

रूपिमिक विश्लेषण की सैद्धांतिक चर्चा के लिए प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक की पुस्तक 'भाषाविज्ञान' के रूपविज्ञान अध्याय के अंतर्गत 'रूपिमविज्ञान' शीर्षक देखा जा सकता है।

हिंदी में बहुवचन के लिए यों तो अपवादतः लोग, सब, गण, जन आदि शब्दों का भी प्रयोग होता है, किंतु प्रत्यय रूप में केवल छः ही आते हैं। इनमें सर्वाधिक प्रयुक्त प्रत्यय 'ओं' है अतः उसे बहु० का रूपिम माना जा रहा है। शेष उपरूप हैं। वितरण इस प्रकार है—

| रूपिम | उपरूप | वितरण |
|---|---|---|
| —ओं | १. —ओं | —सपरसर्ग रूप के लिए सभी शब्दों में ; जैसे घरों, घोड़ों, कवियों, हाथियों, साधुओं, भालुओं, पुस्तकों, लताओं, गुड़ियों, शक्तियों, लड़कियों, वस्तुओं, बहुओं, गौओं आदि। |
| | २. —ओ | —संबोधन में सभी शब्दों (घोड़ो, कवियो, साधुओ आदि) के साथ। |
| | ३. —ए | —अपरसर्ग रूप के लिए आकारांत पु० शब्दों (जैसे घोड़े, लड़के, बेटे) के साथ। |
| | ४. —एँ | —अपरसर्ग रूप के लिए व्यंजनांत (किताबें), आकारांत (माताएँ), उकारांत (वस्तुएँ), ऊकारांत (बहुएँ), औकारांत (गौएँ) स्त्री शब्दों के साथ। |

Scanned by TapScanner

५. —आँ —अपरसर्ग रूप के लिए इकारांत (जातियाँ), ईकारांत (नदियाँ) तथा इयांत (गुड़ियाँ) शब्दों के साथ।

६. —० —अपरसर्ग रूप के लिए व्यंजनांत (घर), इकारांत (कवि), ईकारांत (हाथी), उकारांत (साधु) तथा ऊकारांत (भालू) पु० शब्दों के साथ।

Scanned by TapScanner